संग-संग कस्तूरबा

संपादक

डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय

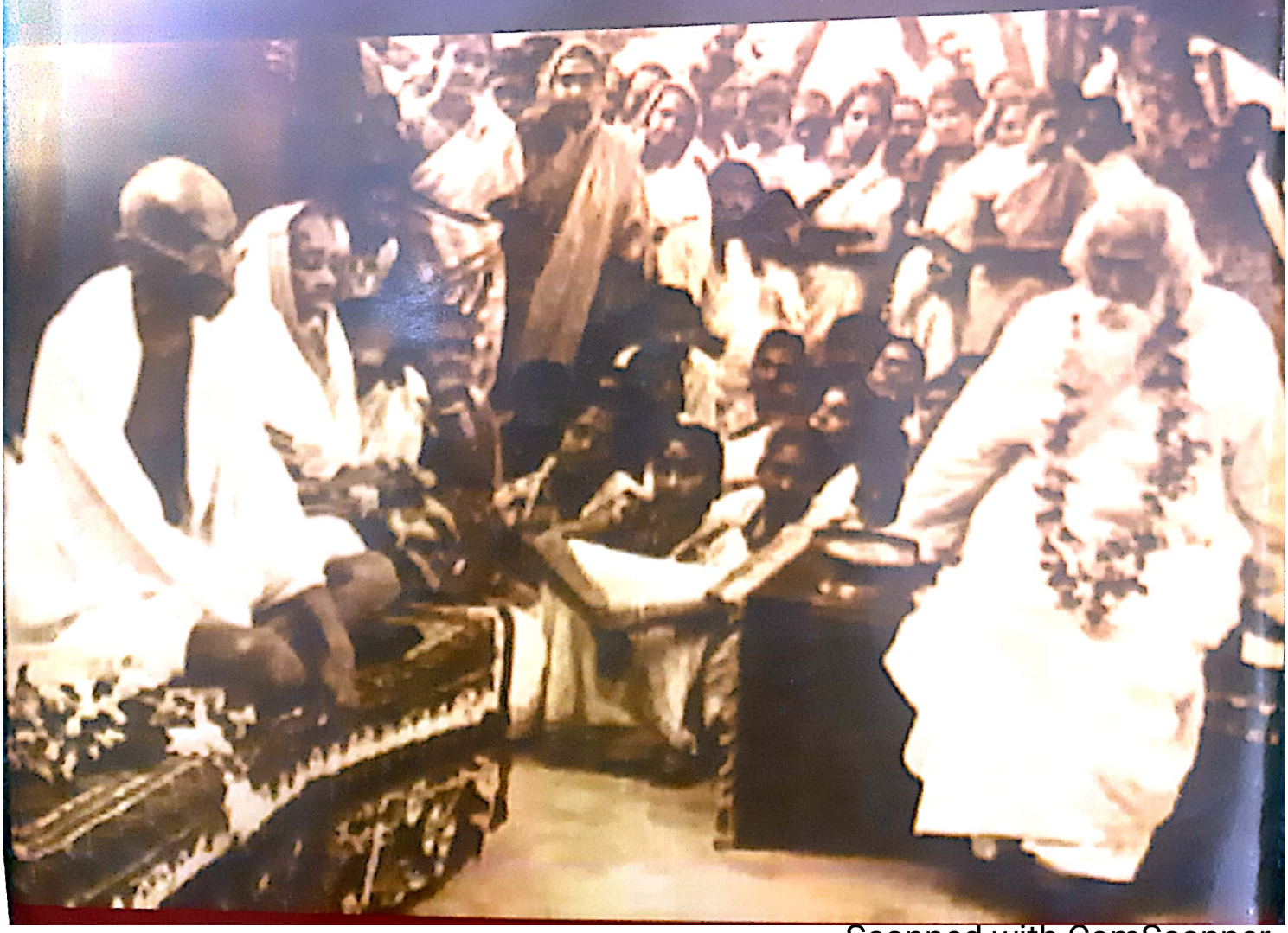

Scanned with CamScanner

संग-संग

कस्तूरबा

सम्पादक

डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय

भारती प्रकाशन

वाराणसी

Scanned with CamScanner

प्रकाशक :
भारती प्रकाशन
45, धर्मसंघ कॉम्पलेक्स,
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी–221010
फोन : 0542-2312677, मो. : 9305292293
E-mail : bharatiprakashan@gmail.com
Website : www.bharatiprakashan.in

© सम्पादक

कवर पृष्ठ भाग : अभ्याश्रय, राजेन्द्र नगर, पटना

प्रथम संस्करण : 2019

मूल्य : 350/- रुपये

ISBN : 978-93-88019-58-3

शब्द-संयोजन :
बबलू कम्प्यूटर
खोजवाँ बाजार, वाराणसी

मुद्रक :
कुमार ग्राफिक्स, दिल्ली–110032

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

	सम्पादकीय	7
1.	गाँधी की सहधर्मिणी कस्तूरबा *डॉ. शारदा पाण्डेय*	13
2.	सेवा की प्रतिमूर्ति : कस्तूरबा *प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी*	22
3.	माता कस्तूरबा की जेल यात्रायें *श्री अमरेन्द्र नारायण*	28
4.	माँ कस्तूरबा गांधी की चित्रकथा *डॉ. योगेन्द्र पाल आनन्द*	34
5.	चम्पारण सत्याग्रह की सत्याग्रही माता कस्तूरबा *डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय*	67
6.	अनुगामिनी कस्तूर बाई *श्रीमती स्नेह लता*	74
7.	बापू के कर्मक्षेत्र में कस्तूरबा का योगदान *डॉ. किरण कुमारी*	111
8.	सहकर्मिणी कस्तूरबा गांधी *डॉ. पुरुषोत्तम कुमार सिंह*	126
9.	आजादी की लड़ाई की वीरांगना *डॉ. सुनीता त्रिपाठी*	132
10.	संगिनी कस्तूरबा *प्रो. प्रतिभा पाण्डेय*	137

Scanned with CamScanner

संगिनी कस्तूरबा

प्रो. प्रतिभा पाण्डेय

"अपनी पत्नी के प्रति अपनी भावना का वर्णन यदि मैं कर सकूं तो हिन्दू धर्म के प्रति अपनी भावना का वर्णन मैं कर सकता हूँ। मेरी पत्नी मेरे अन्तर को जिस प्रकार हिलाती थीं, दुनिया की दूसरी कोई स्त्री नहीं हिला सकती। उसके लिए ममता के अटूट बंधन की भावना दिन-रात मेरे अंतर में जागृत रहती है।"[1]

महात्मा गाँधी ने कस्तूरबा के लिए व्यक्त उपर्युक्त भावना उनके व्यक्तित्व के बिम्ब को स्वयं में समेटे हैं। भारतीय नारी की मूर्तिमान रूप कस्तूरबाई मोहनदास करमचन्द गाँधी के साथ बाल्यावस्था और वैवाहिक सूत्र के उपरान्त उनसे प्रभावित होते हुए विकसित स्वरूप था। जिनमें नम्रता, सरलता, कर्मठता, सेवाभाव आदि के साथ-साथ प्रखरता (औपचारिक शिक्षा के अभाव के बावजूद), स्पष्ट-वक्ता तथा दृढ़ता जैसे प्राकृतिक गुणों की स्वामिनी कस्तूरबा ने गाँधीजी के सामीप्य में रह कर, जन -सेवा, अपरिग्रह और निष्काम कर्मयोग के सतत् अभ्यास से एक ऐसा व्यक्तित्व को प्राप्त किया, जिसने न केवल मोहनदास को महात्मा गाँधी के रूप में परिणत होने में बड़ी भूमिका निभायी, अपितु स्वयं भी भारतीय स्वतंत्रता-समर की अद्भुत सन्नारी होने का गौरव प्राप्त किया।

कस्तूरबाई को गांधी जी बा एक आदर्श शब्द से सम्बोधित करते थे। बा के व्यक्तित्व का सबसे उल्लेखनीय पक्ष संभवतः पति गाँधी के व्यक्तित्व से एकाकार हो, उनके व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक सभी निर्णयों में सहभागिता और यह सहभागिता अन्तर्मन में उठे द्वन्द्वों, शंकाओं, प्रश्नों को तिरोहित करते हुए दीखती रही। इसके पीछे गाँधी जी के साथ उनका सौभाग्य था। जिसकी झलक किंचित बा की वह वाणी—"जैसा पति मुझे मिला है, वैसा तो दुनिया में किसी स्त्री को नहीं मिला होगा, अपने पति के कारण ही मैं सारे जगत में पूजी जाती हूँ।"[2]

Scanned with CamScanner

लेकिन उससे भी बढ़कर गाँधी और उनके विश्वासों में अटल विश्वास कस्तूरबा को गाँधीमय बनाने के लिए उनका प्रमुख योगदान था। गाँधी जी ने इसे स्वीकार करते हुए लिखा है–

"बा का जबर्दस्त गुण अपनी इच्छा से मुझ में समा जाने का था। यह कुछ मेरे आग्रह से नहीं हुआ। लेकिन समय पाकर 'बा' के अन्दर ही इस गुण का विकास हुआ था। मेरे प्रारम्भिक अनुभव के अनुसार 'बा' बहुत 'हठीली' थीं। वैसे-वैसे बा खिलती गई और पुख्ता विचारों के साथ मुझमें यानी मेरे सम्पूर्ण कार्यों में हाथ बटाने लगी। बा धीरे-धीरे उसमें तदाकार होने लगीं, सम्भवतः भारत भूमि का यह गुण अधिक प्रिय है। कुछ भी हो, मुझे तो 'बा' की उक्त भावना का यह मुख्य कारण मालूम होता है।"[3]

द्रष्टव्य है यहाँ 'हठीली' और अपना 'चाहा' करने वाली पत्नी के रूप में कस्तूरबा का उल्लेख गाँधी जी ने विवाह के प्रारम्भिक दिनों की अपनी मनोदशा के चित्रण के लिए किया है, जब असहिष्णु और ईर्ष्यालु पति के रूप में वे चाहते थे कि कस्तूरबा के प्रत्येक कार्य की उन्हें जानकारी होनी चाहिए और उनकी अनुमति के बिना कस्तूरबा कहीं नहीं जा सकती। उनके इस 'आदेश' का प्रतिकार कस्तूरबा अपनी तरीके से करतीं। उनका जहां जी चाहे 'बिना उनसे पूछे जरूर जातीं।' अधिक दबाने पर वे और आजादी लेती और गाँधी जी उतना ही बिगड़ते थे।

–आगे चलकर गाँधी जी ने अपनी भूल स्वीकारते हुए इसे कस्तूरबा की दृढ़ इच्छाशक्ति माना। जैसा कि गाँधी जी ने लिखा है "वह हमेशा से बहुत दृढ़ इच्छाशक्तिवाली स्त्री रही, जिनको अपनी नवविवाहिता दशा में मैं भूल से हठीली माना करता था। लेकिन अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण वह अनजाने ही अहिंसक असहयोग की कला के आचरण में मेरी गुरु बन गई।"[4]

इस संदर्भ में एक प्रेरक घटनाक्रम का वर्णन गाँधी जी ने अपनी *आत्मकथा* में 'एक पुण्य स्मरण और प्रायश्चित' शीर्षक से किया है। गाँधीजी के दक्षिण-अफ्रीका प्रवास के क्रम में 1898 के आसपास की इस घटना में गाँधीजी के यहां ठहरे ईसाई कारकून के एवं शौच की सफाई हेतु कस्तूरबा में आनाकारी के कारण पति-पत्नी में विवाद हुआ और गाँधीजी उन्हें घर से बाहर निकालने लगे। घटना को याद करते हुए गाँधीजी ने लिखा–

"मैं ईश्वर को भूल बैठा था। दया का लेशमात्र मुझमें न रह गया था। मैंने उसका हाथ पकड़ा। जीने के सामने ही बाहर निकलने का दरवाजा था। मैं उस असहाय अबला को पकड़कर दरवाजे तक खींच ले गया। दरवाजा आधा खोला।

Scanned with CamScanner

आंखों से गंगा-जमुना बह रही थीं और कस्तूरबा बोलीं—'तुम्हें तो शरम नहीं है, मुझे है, जरा तो शरमाओ। मैं बाहर निकलकर कहां जाती हूँ लेकिन यहां माँ-बाप भी नहीं कि उनके पास चली जाऊँ। मैं औरत ठहरी, इसलिए मुझे तुम्हारी चपत भी खानी ही होगी। अब जरा शरम करो और दरवाजा बन्द कर लो। कोई देखेगा तो दोनों के मुँह पर कालिख लगेगी।"[5]

घटना के वर्णन-क्रम में गाँधीजी ने स्वयं के पुरुषत्व के अहं और उसका सामना करने में कस्तूरबा की दृढ़ सहनशीलता का सुन्दर शब्द-चित्रण *आत्मकथा* में किया है।

स्पष्टतः सत्य के प्रति इस प्रकार के दृढ़ आग्रह और उस शक्ति (फलतः उसके अपार प्रभाव) ने गाँधी जी का यह प्रथम परिचय था, जो आगे चलकर गाँधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन का प्रेरणा-सूत्र बना।

यह भी नियति का विधान था कि गाँधी जी के सत्याग्रह-पथ की प्रथम पथिक भी वे ही बनीं, सन् 1913 ई. में दक्षिण अफ्रीका में ईसाई पद्धति के अतिरिक्त सम्पन्न होने वाले अन्य विवाहों को अयोग्य ठहराये जाने वाले कानून के विरोध में गाँधीजी ने जनान्दोलन निश्चय किया। कस्तूरबा के व्यक्तित्व की यह मथानी प्रक्रिया सहज और आसान बिलकुल ही नहीं थी। यह विभिन्न ऊहापोहों, आजमाइशों और परीक्षाओं की कसौटियों से गुजरते हुए और समय को झेलते हुए खरे सोने की कोटि तक पहुंचाना था। विशेष रूप से शाकाहार ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की परीक्षाएं।

पहले दक्षिण अफ्रीका और फिर भारत में कस्तूरबा को कई बार गंभीर अस्वस्थता झेलनी पड़ी, लेकिन अपने स्वयं के और गांधीजी के विश्वास के चलते मृत्यु के मुख में भी शाकाहार को त्यागना उन्होंने स्वीकार नहीं किया। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के समय उनकी अस्वस्थता पर डॉक्टर ने मांसाहारी स्वीकार करने के लिए अनिवार्यता बताने पर जब गाँधीजी ने उनसे पूछा तो उन्होंने दृढ़तापूर्वक जवाव दियां

"मैं मांस का शोरबा कभी नहीं लूंगी। यह मनुष्य देह बार-बार नहीं मिला करताआपकी गोदी में मैं मर जाऊँ तो परवाह नहीं, पर अपनी देह को मैं भ्रष्ट नहीं होने दूंगी।"[6]

गाँधी जी द्वारा बहुत समझाने और यह कहने कि विचारों के अनुसार चलने के लिए कस्तूरबाई बाध्य नहीं हैं और बहुत से अपने परिचित हिन्दू भी दवा के लिए शराब और मांस लेने में परहेज नहीं करतने के बावजूद कस्तूरबा मांसाहार

Scanned with CamScanner

के लिए तैयार नहीं हुई। थोड़े बहुत दिनोंदिन नोंक-झोंक के बाद गाँधी जी के चिकित्सकीय प्रयोगो को उन्होंने स्वीकारा और ईश्वरीय कृपा से वे स्वस्थ होने लगी।

इस तरह से 1906 ई. में गाँधीजी द्वारा ब्रह्मचर्य का व्रत स्वीकारने के निर्णय में कस्तूरबा ने उनका पूर्ण साथ दिया। इस सम्बन्ध में गाँधीजी ने लिखा है—"1906 में एक दूसरे की स्वीकृति से और अनजानी आजमाइश के बाद हमने आत्म-संयम के नियम को निश्चित रूप से स्वीकार किया था। इसके परिणामस्वरूप हमारी गांठ पहले से कहीं ज्यादा मजबूत बनी और मुझे उससे बहुत आनन्द हुआ।"

एक अन्य स्थान पर गाँधीजी ने उल्लेख किया है—"मेरी अपेक्षा बा के लिए यह बहुत ज्यादा स्वाभाविक सिद्ध होता है। शुरु में बा को इसका ज्ञान भी न था। मैंने विचार किया और बा ने उसको उठाकर अपना बना लिया। परिणामस्वरूप हमारा संबंध उनसे एक सच्चे मित्र के रूप में बना।"[8]

परंतु सबसे अधिक परीक्षा 'अपरिग्रह' की होनी थी, और वह हुई भी। आभूषणों के प्रति भारतीय स्त्री का स्वाभाविक लगाव होता है। यद्यपि गाँधीजी की प्रेरणा से बा ने दक्षिण अफ्रिका के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश के बाद से ही सादगी भरा पहनावा स्वीकार कर लिया था, किंतु सन् 1901 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटते समय गाँधीजी की सार्वजनिक सेवाओं के उपलक्ष्य में अनेक बहुमूल्य उपहार मिले, जिनमें 50 गिन्नियों का एक हार कस्तूरबा के लिए भी था। जब गाँधी जी ने इन उपहारों को अपने पास न रखने का निर्णय लिया तो कस्तूरबा ने बाल-सुलभ प्रतिकार किया, कि मुझे न पहनने दो पर मेरी बहुओं को तो जरूरत होगी।

उन्होंने अपने जवाब में कहा कि विशेषकर हार पर तो वे अपना अधिकार समझ रही थीं। गाँधी जी के इस तर्क की यह हार तो उनकी सेवाओं के बदले मिला है। उन्होंने अपने जवाब में कहा कि "जैसा भी हो, तुम्हारी सेवा क्या मेरी सेवा नहीं है, मुझसे जो रात-दिन मजदूरी कराते हो, क्या वह सेवा नहीं है? मुझे रुला-रुलाकर जो ऐसे-गैरों को घर में रखा और मुझसे सेवा-टहल कराई, वह कुछ भी नहीं?"[9]

अन्त में गाँधी जी कस्तूरबा की सहमति प्राप्त कर सके। इसी तरह से 1926-27 के लगभग साबरमती आश्रम में बा के कमरे में चोरी हुई और चोर कपड़ों से भरे दो संदूक उठा ले गया। गाँधीजी ने प्रश्न किया कि बा के पास दो सन्दूकें कपड़े कहाँ से आए और होने भी क्यों चाहिए?बा की दलील थी कि आश्रम में कभी-कभी पोतियों के आने पर उन्हें देने के लिए भेंट में मिली साड़ियां अथवा खादी के कपड़े रखा करती थीं। गाँधी जी ने उन्हें फिर समझाया कि हम ऐसा संग्रह नहीं कर

Scanned with CamScanner

सकते और निजी भेंट वस्तुएं की भी तत्काल जरूरत होने पर ही अपने पास रखें अन्यथा आश्रम के कार्यालय में जमा करा दें।

ध्यातव्य है कि निजी जरूरतों पर तो उन्होंने कब का अपरिग्रह नियम अपना रखा था, यह किंचित परिग्रह-मोह, जो मात्र स्वजनों, आत्मीयों के लिए रह गया था, वह भी आगे चलकर अशेष हो गया और उन्होंने बापू की इस व्यवस्था को भी स्वीकारा कि उनके सम्बन्धितों बेटे-पोते आश्रम में रहने पर उन पर खर्च राशि आश्रम को दे दिया करें। बच्चे जब जाने वाले होते तो बा खुद ही आश्रम के व्यवस्थापक को कह देतीं—"देखिए, अब ये लोग जाने वाले हैं, इन पर जो भी खर्च हुआ हो, उसका बिल इन्हें दे दीजिएगा।"[10]

व्यक्तिगत जीवन में तो बा अपने अपरिग्रह और सादगी हेतु सभी के लिए प्रेरणास्रोत बनी रही। मीरा बहन के एक उद्धरण के अनुसार—"जब हम लम्बा और कड़ा सफर करते थे, तब बापू कहा करते थे—'बा हम सबको हराती हैं। इतना कम सामान और इतनी कम जरूरतें दूसरे किसी की हैं? मैं सादगी का इतना अधिक आग्रह रखता हूं फिर भी मेरा सामान बा के मुकाबले दुगुना है।"[11]

अत्यन्त कम व्यक्तिगत साजो-समान के बावजूद बा की व्यवस्थित स्वच्छताऔर भव्य सादगी का कोई सानी नहीं था। मीरा बेन लिखती हैं—"हमारी सजग कोशिशों के बाद भी हम बा की स्वाभाविक किन्तु अचूक रूप से स्वच्छ और भव्य सादगी के साथ किसी तरह भाग दौड़ में स्थिर नहीं रह सकते थे। सारे दल में उनका बिस्तर सबसे छोटा होता था और उनकी नन्हीं सी पेटी भी कभी अव्यवस्थित या ठूंसी ठासी नहीं रहती थी।[12] मीरा बेन एक गंभीर संकेत करते हुए कहती है कि बा ने वस्तुतः जो त्यागा था, वह इन सब बुनियादी वस्तुओं के मुकाबले कहीं महत्वपूर्ण है—"लेकिन यह तो भौतिक अपरिग्रह की बात हुई। बापू के साथ रहकर बा ने धीरे-धीरे अपनी आकांक्षाओं और अभिलाषाओं का परिग्रह तजा था, जो विशेष उच्च और विशेष भव्य अपरिग्रह है।"[13]

कर्मठ योगिनी

साबरमती आश्रम की कस्तूरबा की दैनन्दिनी को अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उनके समय का एक बड़ा हिस्सा गाँधी जी को समर्पित था और शेष समय पढ़ाई-लिखाई, चरखा तथा आश्रम और रसोई व्यवस्था, बीमारों की देखभाल आदि में व्यतीत होता था।

प्रातः 4 बजे के समय से लेकर रात्रि विश्राम तक की उनकी दिनचर्या में

Scanned with CamScanner

बापू का शेष भाग था। बापू के सभी कार्य को कस्तूरबा स्वयं करना पसंद करती थीं। उनके लिए भोजन तैयार करना (अस्वस्थ रहने अथवा दूसरे की श्रद्धा होने पर अपनी देखरेख में तैयार कराना) गरम पानी, शहद आदि की व्यवस्था, सिर में तेल मलना, तलवों में घी मलना जैसे कार्य प्रायः आखिर तक वे ही करती रही थीं। इस संदर्भ में मीरा बहन लिखती हैं–

मैंने भी कई सालों तक बापू की सेवा-चाकरी की है। इस बीच मुझे बा के अद्‌भुद गुणों का दर्शन हुआ। ...बा मानो कभी थकती नहीं थीं। ...वे गैर जरूरी बातें करके बापू का वक्त कभी खराब नहीं करतीं। बापू के आसपास के सभी लोगों में वे बापू को कम से कम तकलीफ देतीं और उनकी ज्यादा से ज्यादा सेवा करतीं।''[14] बचे हुए समय में बा वन्दे मातरम्, गुजरात समाचार, हरिजन बंधु जैसे दैनिक और साप्ताहिक अखबारों के द्वारा दीन-दुनियां की खबरों पर नजर रखती थीं। बचपन में गाँधी जी की इच्छा व प्रयास के बावजूद बा पढ़ नहीं सकी थीं, परंतु बाद में इसका महत्व समझकर वे प्रतिदिन किसी न किसी के पास बैठकर कुछ न कुछ पढ़ती थीं। तुलसीकृत रामायण, गीता के श्लोकों का उच्चारण करती थीं। लिखने को दिया जाने पर बा उत्साही विद्यार्थी की भांति दूसरे दिन लिखकर लातीं और गलतियाँ होने पर उन्हें सुधार कर दुबारा लिखने में भी नहीं हिचकतीं। सन् 1930 के जेल-जीवन में लगभग 60 वर्ष की आयु में वे बहनों से अंग्रेजी लिखना-पढ़ना (बोलने का आवश्यक अभ्यास उन्हें था) वे नए अक्षरों, शब्दों और वाक्यों को लिख-लिखकर अभ्यास करती थीं। इदसी तरह आगा खां महल में नजरबन्दी के समय अपने जीवन की सायंवेला में भी वे बापू से गीता के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण को सीखने का प्रयास किया करती थीं।

आश्रम निवास के समय बा नियमित चरखा भी चलाती थीं। उस क्रम वे प्रतिदिन 400-500 सूत की तार कातती थीं। प्रार्थना के बाद 'रोज किसने कितना सूत काता' यह लेखा-जोखा होने पर उसमें बा का नाम ज्यादा सूत कातने वालों में ही होता था।[15]

यथा उल्लेख किया जा चुका है कि गाँधी जी के दक्षिण-अफ्रीका में प्रारम्भ किए गए सत्याग्रह से ही कस्तूरबा का पदार्पण सार्वजनिक जीवन में हो गया। आंदोलन की रूपरेखा बनने के पश्चात् उन्होंने स्वयं सत्याग्रह के मार्ग पर चलने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा–''मुझसे इस बात की चर्चा आप नहीं कर रहे, इसका मुझे दुःख है। मुझमें ऐसी क्या ऐसी कमी है कि मैं जेल नहीं जा सकती? मुझे भी उसी रास्ते जाना है, जिस रास्ते जाने की सलाह आप इन बहनों को दे रहे

Scanned with CamScanner

हैं।"[16] यही नहीं, गाँधी जी के द्वारा उनकी सामर्थ्य के प्रति शंका किए जाने पर उन्होंने कहा—"मैं हार कर छूट आऊँ तो मुझे मत रखना। मेरे बच्चे तक सह सकें, आप सब सहन कर सकें और मैं अकेली ही न सह सकूं, ऐसा आप सोचते कैसे हैं? मुझे इस लड़ाई में शामिल होना ही होगा।"[17]

स्पष्टतः दो अन्य बहनों के साथ उन्होंने सत्याग्रह प्रारम्भ किया तदुपरान्त तीन माह की सजा उन्हें मिली। बा जेल में भी खराब खाना खाने का विरोध करते हुए फलाहार के लिए 5 दिन की भूख हड़ताल की और जेल अधिकारियों को झुकने पर मजबूर किया। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भी कस्तूरबा ने गाँधी जी के कंधे से कंधा मिलाकर अपनी सहभागिता दी।

चम्पारण सत्याग्रह के समय गाँव-गाँव घूमकर स्त्रियों और बच्चों को स्वच्छता का पाठ पढ़ाया तो खेड़ा सत्याग्रह में बापू के साथ गांवों में घूमी। चम्पारण के भितिहरवा ग्राम के समीप एक गांव में जब कस्तूरबा स्वच्छता और सफाई की शिक्षा देने गई उस समय वहां की गरीबी ने कस्तूरबा जी को झकझोर दिया जब एक उस गांव की महिला ने अपनी गरीबी की व्यथा उन्हें सुनाने लगी। कस्तूरबा ने इस महिला की गरीबी के भाव को सुनकर बापू का बताया था, तब बापू ने कहा था कि सर्वप्रथम गरीबी को दूर करना आवश्यक है तभी यहां की स्थिति में सुधार हो सकता है।[18] कुछ स्थानों पर संक्षिप्त भाषण भी दिए जिनसे महिलाओं से अपील की कि वे सत्याग्रह में पुरुषों का साथ दें तथा उनका साहस बढ़ाएं। 1922 में असहयोग आंदोलन के क्रम में घटी चौरी-चौरा (गोरखपुर) कांड के बाद गांधीजी गिरफ्तार कर जेल भेज दिए गए। गाँधी जी की अनुपस्थिति में बा ने गांव-गांव जाकर बापू के रचनात्मक कार्यक्रम का प्रचार किया और जनता से उसमें सक्रिय सहयोग करने की अपील की। बा ने कहा कि वे विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करें तथा देश में निर्मित खादी के वस्त्र पहनें।

सन् 1930 की दांडी यात्रा के पश्चात् गाँधी जी गिरफ्तार कर लिए गए। तब कस्तूरबा ने नारियों के साथ नमक बनाकर नमक-कानून भंग किया, जिसमें उन्हें गिरफ्तार कर 6 माह की कारावास की सजा दी गई। सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के प्रारम्भिक दौर में ही 9 अगस्त को प्रातःकाल गाँधी जी को और सायंकाल में कस्तूरबा को गिरफ्तार कर लिया गया। दोनों को पूना में आगा खां महल में नजरबन्द कर दिया गया। यहीं पर गिरते स्वास्थ्य और अन्य चिन्ताओं से घिरी बा 22 फरवरी 1944 को बापू की गोद में अन्तिम सासें ली।

सभी आन्दोलनों में 'बा' की भागीदारी स्वैच्छिक और स्वतःस्फूर्त थी, न कि

Scanned with CamScanner

गाँधीजी अथवा किसी अन्य के आग्रह अथवा दबाव से। गाँधी जी ने बाद में कहा भी—'अगर बा अनपढ़ थीं, फिर भी कई सालों से उन्हें इस बात की पूरी-पूरी आजादी थी कि वे जो करना चाहें, करें। क्या दक्षिण अफ्रीका में और क्या हिन्दुस्तान में, जब-जब भी वे किसी लड़ाई में शरीक हुई हैं, अपने आप अपनी आंतरिक भावना से ही।''[19]

सत्याग्रह आन्दोलनों में प्रत्यक्ष भागीदारी के अतिरिक्त स्वच्छता, स्वास्थ्य, शारीरिक श्रम, शिक्षा और खादी के लिए भी उन्होंने जन-जन में अलख जगाई। उद्‌बोधनों और भाषणों के साथ-साथ स्वयं उदाहरण के रूप में थी। आश्रमों की सामूहिक रसोई की सार-संभाल हो या गोशाला की गायों हेतु, तथा गाँधी जी के तूफानी दौरों की अचूक व्यवस्था, ढलती वय में भी कस्तूरबा अपने उद्यम से नवयुवकों को भी लज्जित करती थीं। वनमाला पारीख कहती हैं—

''उनका उद्यम आजकल के नौजवानों को भी शरमाने वाला था। कभी रसोई में, तो कभी साग काटने में और कभी सूत कातने में, यों एक के बाद एक उनका काम चलता ही रहता।''[20]

करघा-कार्य में सदैव प्रेरक भूमिका अपनाने वाली 'बा' ने स्वयं खादी की साड़ी धारण की और आजीवन धारण किए रहीं। अपनी अन्तिम यात्रा के लिए भी उन्होंने अपनी इच्छानुसार बापू के हाथों से कते सूत की खासतौर से उनके लिए तैयार साड़ी में ही प्रस्थान यात्रा किया। वनमाला पारीख बा के खादी प्रेम का एक उदाहरण देते हुए कहती हैं—

''एक दिन बा के पैर की छोटी उंगली से खून निकला। बा खादी की पट्‌टी बांधने जा रही थीं, इतने में एक बहन ने महीन कपड़े की पट्‌टी ला दी और कहा—इस महीन कपड़े से रगड़ नहीं लगेगी और पट्‌टी अच्छी तरह बंधेगी। परंतु मुझे तो खादी की पट्‌टी ही चाहिए। वह खुरदरी भी होगी तो मुझे नहीं चुभेगी' कहकर बा ने खादी की ही पट्‌टी बांधी।''[21]

इस प्रकार गांधी विचार पथ पर रच-बस गयी बा ने अपने व्यक्तित्व को समय और आवश्यकता के अनुसार भिन्न-भिन्न भूमिकाओं के लिए तैयार किया। गांधी जी के जीवन में भी कभी वे उनकी अनुगामिनी रहीं, कभी सहधर्मिणी और कभी सहयात्री, कभी निजी सहायक और सचिव, कभी प्रेरणा तो कभी सलाहकार। यहां तक कि यथावसर गाँधीजी के जीवन में गुरु और मां की रिक्तता की पूर्ति भी उन्होंने की, जिसकी स्वीकारोक्ति गाँधीजी इस प्रकार करते हैं—बा पवित्र हृदय की सच्ची पत्नी तो थीं ही, स्नेहमयी मां भी थीं। मेरी मां, बहुत पूर्व में मर चुकी

Scanned with CamScanner

थीं। "बा अपने अमृत स्नेह से उस अभाव की पूर्ति किया करती थीं।" उनके रहते कभी भी मैंने यह नहीं सोचा कि मेरी मां नहीं है।"[22]

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि समस्त द्वन्द्वों, विरोधाभासों को नजर अन्दाज कर बापू के जीवन में उन्हीं के कथनानुसार ताने-बाने की तरह समरूप हो गयीं गांधी के सम्पूर्ण जीवन में 'बा' का होना बापू के लिए लाभदायक रहा।

अन्य संदर्भित ग्रन्थ

1. Nilima Dalmia, *Secret Diary of Kasturba*, Delhi
2. Arun Gandhi, *Kasturba A life*, Pengwin, Indian
3. Forgotten Women, *The untold story of Kastur, Wife of Mahatma Gandhi*, Ozark Mointan,
4. *महात्मा गाँधी के विचार*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
5. Bharti Thakur : *Women in Gandhi's Mass Movements*, Deep & Deep publication pvt. ltd. New Delhi
6. ओम प्रकाश पाण्डेय : *महात्मा गाँधी का चम्पारण सत्याग्रह*, भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2017

संदर्भ

1. एस. एल. नागौरी, कान्ता नागौरी, *स्वतंत्रता सेनानी कोश* (गांधी युगीन) जयपुर, पृ. 11
2. वही, पृ. 111
3. गांधी साहित्य, *मेरे समकालीन*, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 128
4. वही, पृष्ठ 129
5. *मोहनदास करमचन्द गाँधी*, सस्ता सहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 182
6. वही, पृ. 213
7. *गांधी साहित्य मेरे समकालीन*, पृ. 128
8. वही, पृष्ठ 128
9. वही, पृष्ठ 115
10. *अन्तिम जन*, जुलाई 2015, पृ. 23
11. वही, पृष्ठ 13
12. वही, पृष्ठ 13
13. वही, पृष्ठ 13
14. वही, पृष्ठ 21
15. वही, पृष्ठ 20

Scanned with CamScanner

16. गांधी जी : *दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास*, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृ. 319
17. वही, पृष्ठ 318
18. ओम प्रकाश पाण्डेय, (सं.) *चम्पारण और गांधी*, इम्प्रेशन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2014, पृ. 72-82, *महात्मा गांधी का चम्पारण सत्याग्रह* (दि.स.1917), वाराणसी
19. गांधी साहित्य, *मेरे समकालीन*, पृ. 130
20. वनमाला पारिख, *हमारी बा*, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद
21. वही
22. *स्वतंत्रता सेनानी कोश* (गांधी युगीन), पृ. 114

** आचार्य, इतिहास विभाग,*
मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर। (राज.)
dr_pratibha_pandey@yahoo.com

❑❑

Scanned with CamScanner